गुरुपूर्णिमा के अवसर पर शास्त्रों से लिए गए उद्धरण

भारत के पवित्र शास्त्र सदियों से यह सिखाते आए हैं कि जीवन का परम लक्ष्य है, अपनी आत्मा व परमात्मा के बीच ऐक्य का ज्ञान होना। परमानन्द व करुणा से ओतप्रोत यह ज्ञान, एक सिद्धगुरु की कृपा से व गुरु-प्रदत्त मार्ग का अनुसरण करने के लिए शिष्य द्वारा किए गए एकनिष्ठ प्रयत्न से प्राप्त होता है।

शिष्य अपने श्रीगुरु से जो कुछ भी प्राप्त करता है, उसकी अनन्त महिमा को समझकर, एक निष्ठावान शिष्य अर्पण के अभ्यास को विकसित करता है। संस्कृत भाषा में अर्पण शब्द का अर्थ है, शुद्ध भाव के साथ दी गई भेंट। इस प्रकार की भेंट के पीछे, शिष्य की जो भावना होती है, वह है अपने श्रीगुरु को निस्वार्थ प्रेम व एकनिष्ठ संकल्प के साथ देना।

इस भाग के अन्तर्गत, शास्त्रों से लिए गए उद्धरण, उस मनोभाव और संकल्प का वर्णन करते हैं जो भेंट अर्पित करते समय होने चाहिएँ और इस बात को भी व्यक्त करते हैं कि देने के ये कृत्य किस प्रकार देने वाले व्यक्ति को परमात्मा के साथ ऐक्य की अवस्था तक ले जाते हैं। शास्त्रों से लिए गए उद्धरणों का अध्ययन करना, उनका पाठ करना व उनमें निहित सिखावनियों को आत्मसात् करना, एक तरीक़ा है जिसके माध्यम से हम श्रीगुरु के प्रति श्रद्धा अर्पित कर सकते हैं और उस अनमोल ज्ञान का सम्मान कर सकते हैं जो श्रीगुरु हमें प्रदान करते हैं।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®